अथ बुधवार की आरती (हिन्दी)

आरती युगल किशोर की कीजै, तन मन न्यौछावर कीजै || टेक ||

गौरश्याम मुख निरखन लीजै, हरि का स्वरूप नयन भरि पीजै

रवि शशि कोटि बदन की शोभा, ताहि निरिख मेरो मन लोभा

ओढे नील पीत पट सारी , कुंजबिहारी गिरिवरधारी

फूलन की सेज फूलन की माला , रतन सिंहासन बैठे नन्दलाल

कंचनथार कपूर की बाती, हरि आए निर्मल भई छाती

श्री पुरूषोत्तम गिरिवरधारी आरती करे ब्रज नारी

नंद नन्दन ब्रजभानु किशोरी, परमानन्द स्वामी अविचल ज़ोरी

Pandit.com